4

उत्तम शौच धर्मांग पूजा

श्री दशलक्षण धर्म विधान

1. उत्तम क्षमा
2. उत्तम मार्दव
3. उत्तम आर्जव
4. उत्तम शौच
5. उत्तम सत्य
6. उत्तम संयम
7. उत्तम तप
8. उत्तम त्याग
9. उत्तम आकिंचन्य
10. उत्तम ब्रह्मचर्य

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

: स्वर :
पण्डित सुनीलजी शास्त्री, राजकोट

: रचयिता :
कविवर पण्डित राजमल पवैया

: स्वर :
सुश्री श्वेतल जैन, राजकोट

4

श्री
उत्तम शौच
धर्म
पूजन

सर्वोदय अहिंसा

सर्व: सर्वत्र नन्दतु

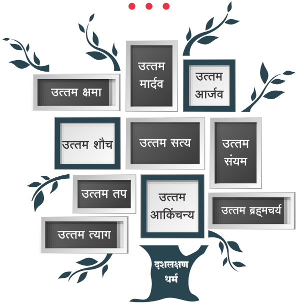

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

श्री उत्तम शौच धर्मांग पूजन

स्थापना

(छन्द–दोहा)

शौच धर्म ही लोभ का करता है संहार।
संतोषामृत पानकर होता सौख्य अपार।।
जो तृष्णा को जीतते पाते परमानंद।
भव समुद्र को लाँघ कर पाते ध्रुव आनंद।।

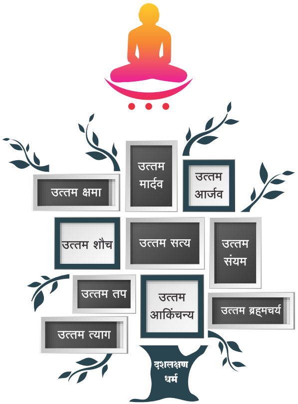

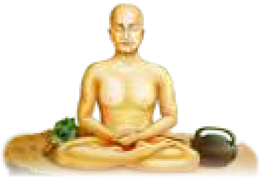

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मांग!
अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मांग!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मांग!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

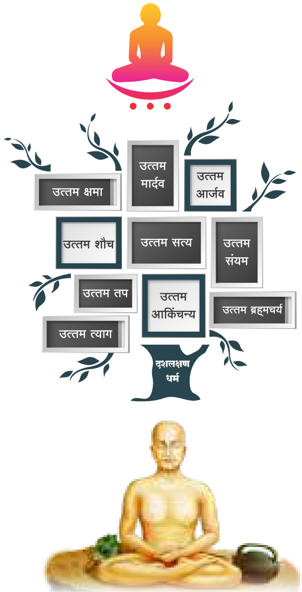

अष्टक

(छन्द–विधाता)

नीर शुचितामयी लाऊँ जन्म मरणादि दुख हरने।
शरण प्रभु आपकी पाऊँ अशुचिमय भाव जय करने।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय जन्म–जरा–मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

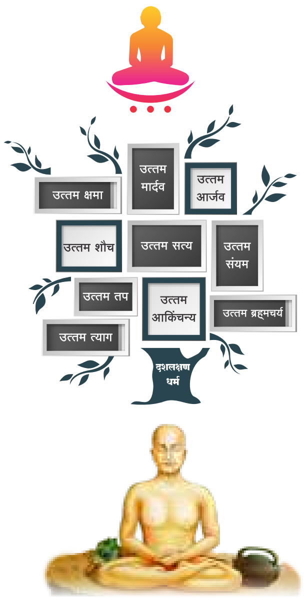

शुद्ध चंदन पूर्ण शुचिमय परम शीतल हृदय लाऊँ।
भवातप नाश करने को निजातम को सदा ध्याऊँ।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय क्रोधकषायविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

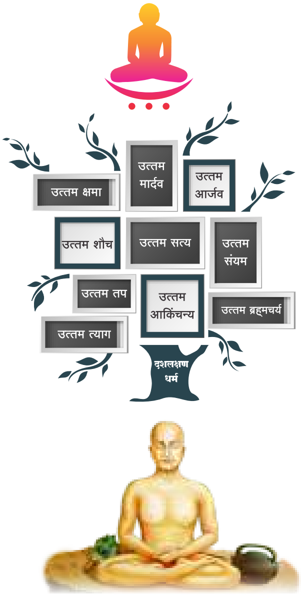

शुद्ध अक्षत परम शुचिमय स्वपद अक्षय प्रदाता है।
विभावी भाव नाशक है परम सुख शान्ति दाता है।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय मानकषायविनाशनाय
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

परम शुचिमय पुष्प लाऊँ सुगंधित भावना वाले।
काम के रोग सब नाशूँ सतत अत्यन्त दुख वाले।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय मायाकषायविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

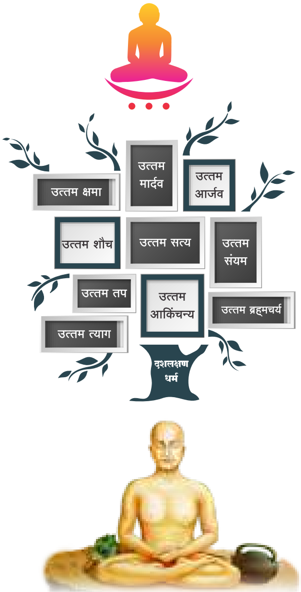

महा शुचिमय सुचरु लाऊँ स्वानुभव प्राप्त करने को।
निराहारी स्वपद पाऊँ सौख्य उर व्याप्त करने को।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय लोभकषायविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

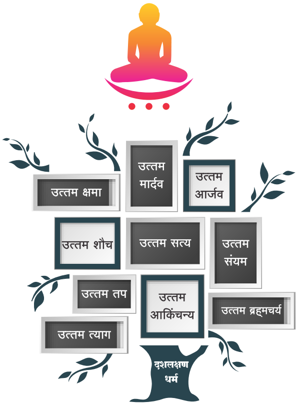

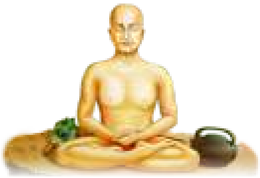

महा शुचिमय ज्ञान घृतमय दीप जोऊँ हृदय भीतर।
मोह विभ्रम मिटाऊँ मैं ज्ञान का प्राप्त हो निर्झर।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

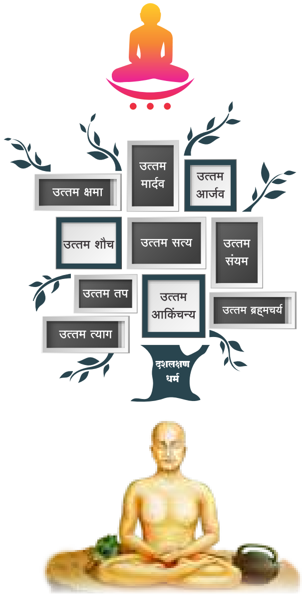

परम शुचिमय धूप लाऊँ ध्यान निज का करूँ स्वामी।
कर्म आठों विनाशूँ मैं बनूँ त्रैलोक्य में नामी।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव में जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय विभावपरिणतिविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

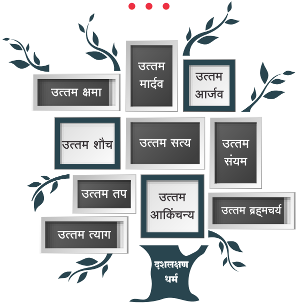

शुद्ध शुचितामयी रस फल मोक्षफल के प्रदाता हैं।
सकल तृष्णा निवारक हैं विभावी भाव घाता है।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय महामोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

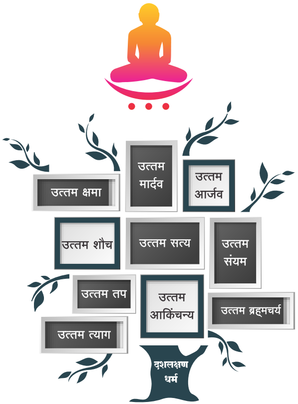

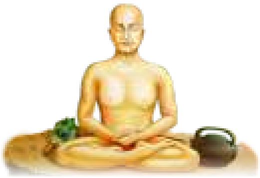

महा शुचिमय अर्घ्य गुणमय बनाने का यतन कर लूँ।
प्रकट पद हो अनर्घ्य मेरा राग-द्वेषादि सब हर लूँ।।
धर्म उत्तम शौच पालूँ लोभ के भाव मैं जीतूँ।
पुण्य अरु पाप भावों से सदा को नाथ मैं रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

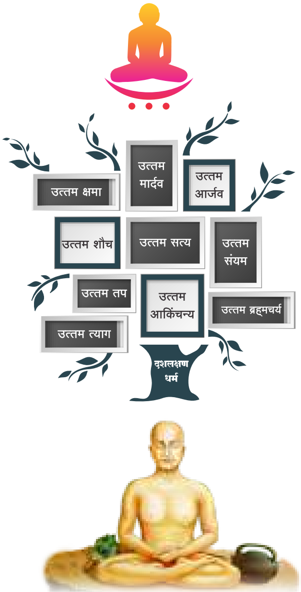

अर्घ्यावलि

(छन्द–हरिगीत)

स्वर्ग सुख सब है विनश्वर आयु भी है नाशवान।
आयु सागर पल्य की भी सदा ही विद्युत समान।।
अथिर है संसार सारा थिर नहीं कोई कहीं।
धर्म उत्तम शौच सुखमय अन्य कोई भी नहीं।।

ॐ ह्रीं श्री देवसुखवांछाविहीन–शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

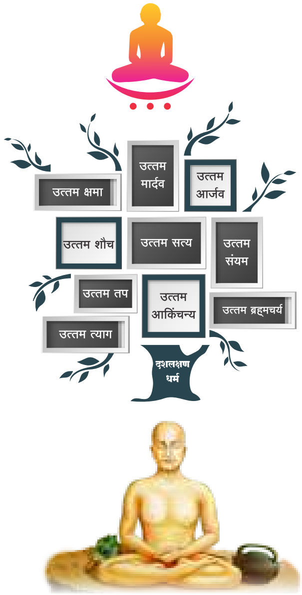

चक्रवर्ती पद मिले यह भोग वांछा दुखमयी।
राज्य हो षट् खंड का वह भी नहीं है सुखमयी।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चक्रियपदभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

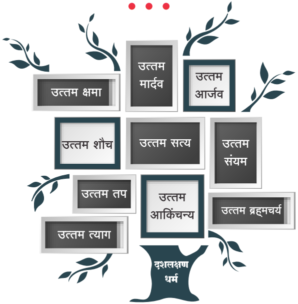

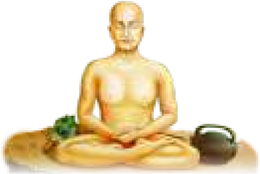

तीन खंड महान के पति नहीं नारायण सुखी।
देव सेवक चतुर्विध सेना मगर फिर भी दुखी।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री नारायणपदभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

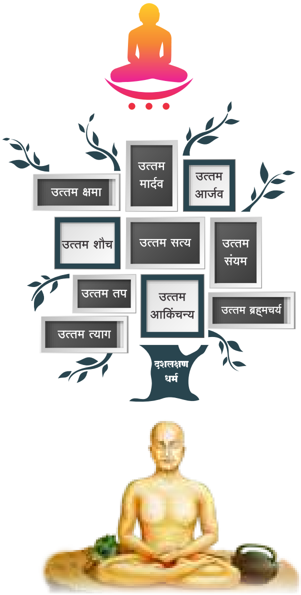

मोक्षगामी कामदेव महान सबका मन हरें।
देव दल भी शुभ उदय से आन कर सेवा करें।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री कामदेवपदभोगवांछाविहीन–शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

स्पर्श के हैं भेद आठों विषय की वांछा भरे।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल के अनुसार भाव हृदय करे।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री स्पर्शनेन्द्रियभोगवांछाविहीन–शौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

भेद रस के पाँच उर में भोग की इच्छा करें।
तृप्त इनसे मन न होता जीव उर दुख ही भरें।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री रसनेन्द्रियभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

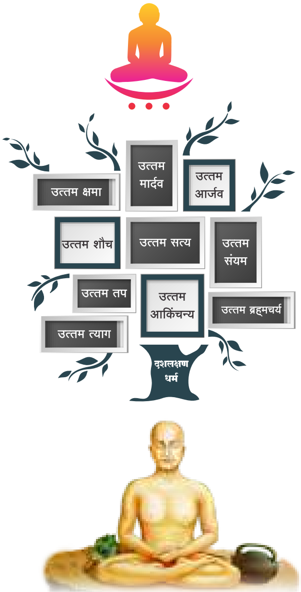

घ्राण इन्द्रिय गंध के दो भेद हैं वे दुखमयी।
दुर्गंध हो अथवा सुगंध न मुझे पलभर सुखमयी।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री घ्राणेन्द्रियभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चक्षु इन्द्रिय पंच भेद प्रसिद्ध भोगाकांक्षामयी।
स्वर्ग के भी भोग की इच्छा सुरों की दुखमयी।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चक्षुरेन्द्रियभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

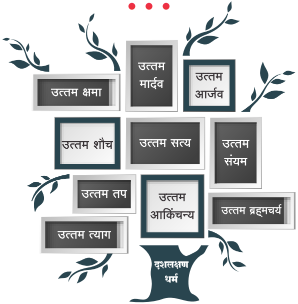

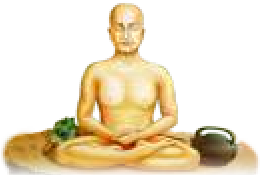

कर्ण इन्द्रिय भोग सातों राग के हैं दुखमयी।
गीत हो संगीत हो या वाद्य रंच न सुखमयी।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री कर्णेन्द्रियभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

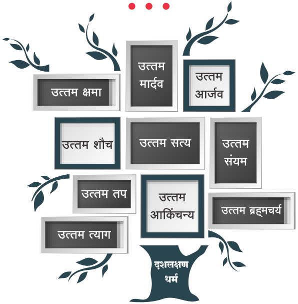

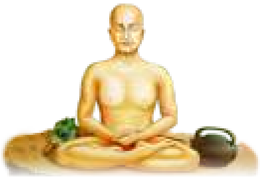

जीव चंचल चित्त में हैं भोग वांछाएँ बहुत।
सदा करता बहुत सेवन फिर भी रहता सुख रहित।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मनवांछितभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

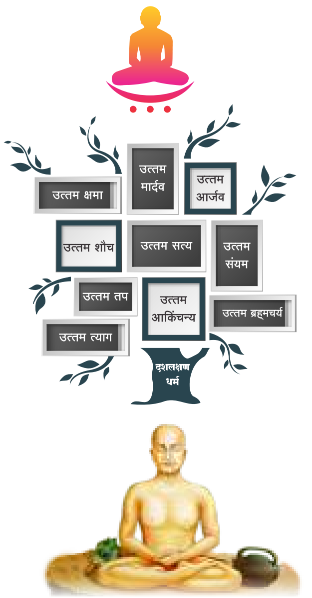

तन अशुभ मल मूत्र से पूरित मढ़ा है चर्म से।
नहीं करता घृणा इससे बँध रहा है कर्म से।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री तनसंबंधीभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

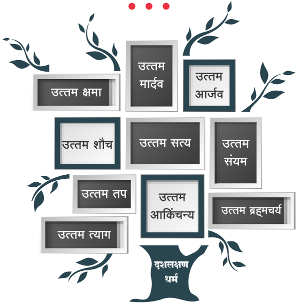

रत्न धन घर में बहुत हैं फिर भी धनवांछा बहुत।
दान भी देता है पर सुख शान्ति से पूरा रहित।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री धनवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

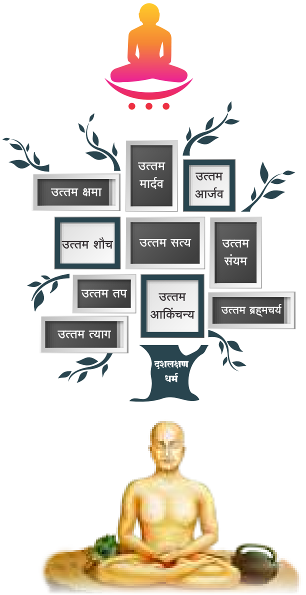

नारियाँ सुन्दर शची सम आज्ञाकारी महान।
तृप्ति फिर भी नहीं पायी दुखी रहते सदा प्राण।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री वनिताभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

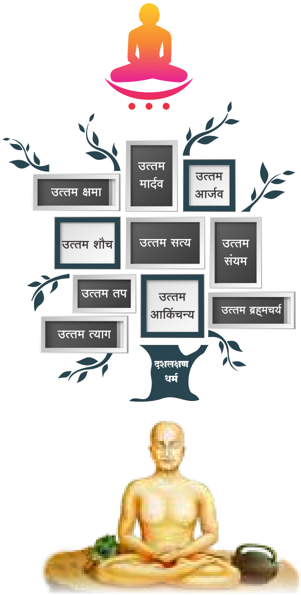

बहु सुत आज्ञाकारी हैं अरु कामदेव सम लक्ष्मीवान।
भोग वांछा फिर भी मेरी कम न होती हे भगवान।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पुत्रभोगवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

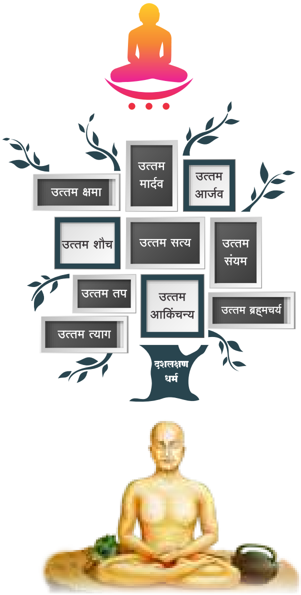

भ्रात बहु भी विनययुत हैं आज्ञा पालक भी बली।
फिर भी मेरी भोग ज्वाला में सतत आत्मा जली।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री भ्रातसुखवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

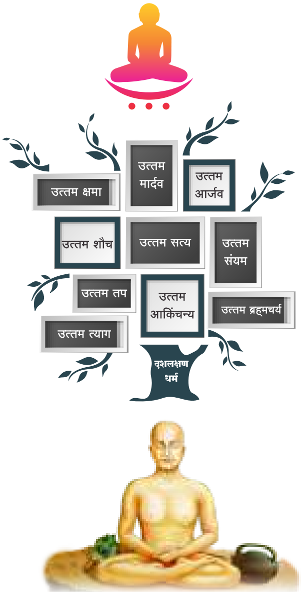

अन्तरंगी मित्र मुझ से प्रेम करते हैं सदा।
पर न वांछा पूर्ण होती दुखी रहता सर्वदा।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मित्रानुबन्धवांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

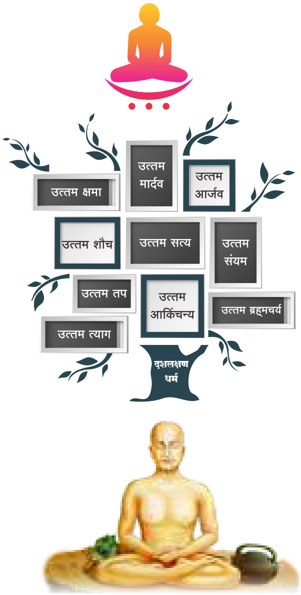

मित्र सुत तिय दास दासी भ्रात माता पिता सब।
सकल परिजन सकल वैभव शांति सुख देता है कब।।
अथिर यह सब जानकर शुद्धात्म का चिन्तन करूँ।
धर्म उत्तम शौच धारूँ भोग वांछा क्षय करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सकलपरिजनानुकारित्ववांछाविहीन-शौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

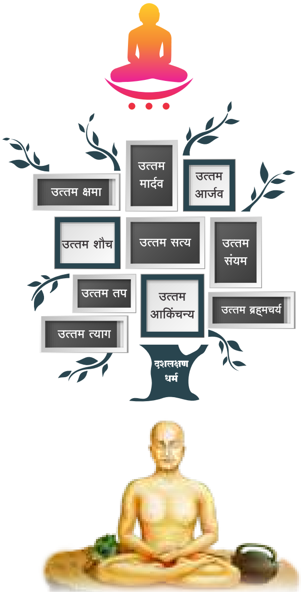

जयमाला

(छन्द–दोहा)

लोभ मूल है पाप का सौख्य मूल है शौच।
जिनके मन में लोभ है उनको सदा अशौच।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(छन्द–मानव)

यह भेदज्ञान का मौसम समकित लेकर आया है।
जिसका जी चाहे ले लो यदि स्वकल्याण भाया है।।
जो मोह नींद में सोते यह उन्हें जगाने आता।
जो जग जाते हैं तत्क्षण उनने ही यह पाया है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

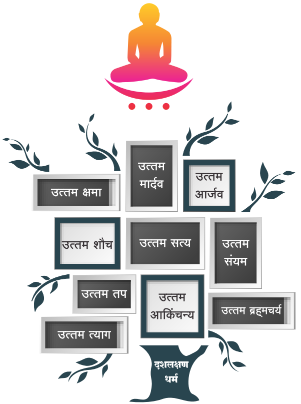

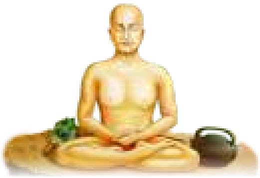

इसको पाते ही प्राणी सब द्रव्यदृष्टि हो जाते।
जो अज्ञानी होते हैं उनको न रंच भाया है।।
समकित पाते ही प्राणी शिवपथ पर आ जाते हैं।
चारित्र स्वरूपाचरणी उनके उर में छाया है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्व: सर्वत्र नन्दतु

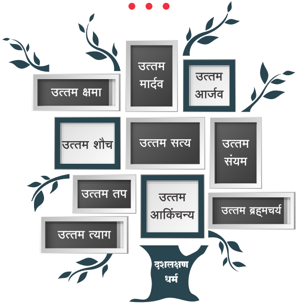

समकित के बिना न होती है सफल साधना अणु भर।
साधना सफल करने को समकित का धन लाया है।।
अविरति प्रमाद क्षय का ही जो जन प्रयत्न करते हैं।
वे ही शुचिता पाते हैं अवसर अपूर्व आया है।।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

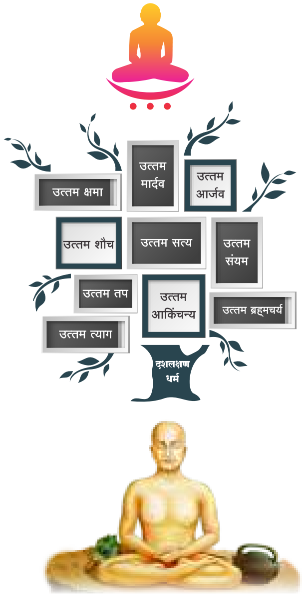

कर्मों को विनशाते हैं कैवल्यज्ञान पाते हैं।
शिवपुर तक जाने का रथ ज्ञानी ने ही पाया है।।
जाते हैं सिद्धशिला तक शाश्वत ध्रुव सुख पाते हैं।
त्रिभुवन में शौचधर्म यश इन्द्रादिक ने गाया है।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

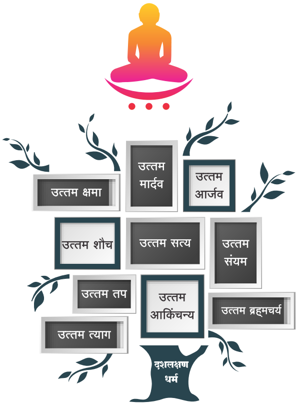

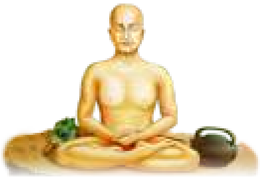

आशीर्वाद

(छन्द-सोरठा)

लोभ विनाशक श्रेष्ठ उत्तम शौच महान है।
पूजन की है आज शुचिता पाऊँ हे प्रभो।।

इत्याशीर्वादः

सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

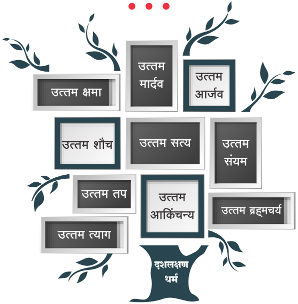

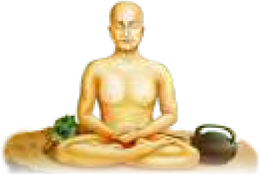

-: जाप्य मंत्र :-

।।ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मांगाय नमः।।

सर्वोदय अहिंसा

सर्वः सर्वत्र नन्दतु